बच्चों की ऊर्जा को जीवन्त करना और मस्तिष्क को कार्यरत रखना

आशा सिंह

एक शिक्षक-प्रशिक्षक के नाते मैं अपनी कक्षा को, कक्षा के ही किसी अनुभव के साथ शुरू करती हूँ, हालाँकि मेरे पूर्व-स्नातक विद्यार्थी, शिक्षक बनना सीख रहे हैं, लेकिन शुरू में उन्हें एकाग्रता सम्बन्धी अभ्यास में भाग लेना हास्यास्पद लगता है। मैं उन्हें बताती हूँ कि :

जब शिक्षक कक्षा में प्रवेश करते हैं तो आमतौर पर बच्चे बड़े जोशो-ख़रोश के साथ गपशप में लगे रहते हैं और गुड मॉर्निंग का राग अलापने के लिए तैयार रहते हैं। शिक्षक मज़ाकिया भाव-भंगिमाओं के साथ इस प्रक्रिया को बदल सकते हैं जैसे कि अपनी बाहें ऊपर उठाना, अपनी उँगलियाँ हिलाना और तारे तारे, तार्रे-तार्रे-तार्रे और इसके बाद हँसते तारे, रोते तारे, गुस्सेवाले तारे तथा अन्त में तार्रे-तार्रे-तार्रे गा सकते हैं।[1] और फिर अचानक बच्चों का ध्यान केन्द्रित करने के लिए वे अपने स्वर को धीमा और कोमल बनाकर कहते हैं, शान्त तारे ।

मेरा सुझाव था : नए विचारों को आत्मसात करने के लिए तैयार, इस जोश से भरे समूह के साथ अपना पाठ शुरू करें। विद्यार्थियों को शायद यह गतिविधि कक्षा-प्रक्रिया के रूप में कुछ कम गरिमापूर्ण लगी, लेकिन उन्होंने अनिच्छा से ही सही, यह बात मान ली। मैंने अपने इस विश्वास का अनुसरण किया कि बच्चों के साथ जुड़ने के सक्रिय तरीक़ों का अनुभव करना चाहिए, केवल कल्पना करने से बात नहीं बनती।

जल्द ही विद्यार्थी इंटर्नशिप के लिए गए जहाँ उन्हें पाठ-योजनाओं का संचालन करना था। वहाँ उन्हें सैद्धान्तिक शैक्षणिक अभ्यासों का उपयोग वास्तविक कक्षाओं में करना था। स्कूल में तीन सप्ताह की इंटर्नशिप के बाद मैं उनसे मिली और तारे तारे, तार्रे-तार्रे-तार्रे की उपयोगिता के बारे में ढेर सारी तारीफ़ सुनी। विभिन्न भावनात्मक तालों के साथ इस गायन ने बच्चों की ऊर्जा को सही दिशा दिखाई एवं उन्होंने ध्यान केन्द्रित करने का महत्त्व समझा और इसके फलस्वरूप विद्यार्थी-शिक्षक, बच्चों का स्नेह प्राप्त कर सके।

विद्यार्थी-शिक्षकों के उपर्युक्त अनुभव को इसलिए साझा किया गया है ताकि हमें शिक्षक द्वारा नियंत्रित उस विधि का विकल्प मिल सके जिसमें शिक्षक ज़ोरदार शब्दों में कहते हैं, 'क्या हम सभी शान्त हो सकते हैं'- और उसके स्थान पर किसी ऐसे हल्के-फुल्के तरीक़े को अपनाया जाए जिससे कक्षा को अनुशासित किया जा सके। सिल्विया एश्टन वर्नर ने अपनी प्रभावशाली पुस्तक, द टीचर में, अपने विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए पियानो का उपयोग करने का वर्णन किया है। कक्षा के उपकरण स्थानीय सन्दर्भों और संसाधनों से सम्बन्धित होने चाहिए। बच्चों में खेलने की प्रवृत्ति होती है, इसलिए जो कक्षा-प्रक्रियाएँ धमाचौकड़ी के माध्यम से अनुशासन सिखाती हैं, वे बच्चों के स्वभाव के अनुकूल होती हैं। जब बच्चों को थोड़ा हँसने, थोड़ा मज़ाक करने और खिलखिलाने का समय मिलता है तो उन्हें भावनात्मक रूप से संतुष्टि मिलती है। उन्हें महसूस होता है कि इस बात को स्वीकारा जा रहा है कि वे बच्चे हैं; उन्हें केवल विद्यार्थी नहीं माना जा रहा जिनमें ज्ञान भर देना है।

अदृश्य जादुई औषधि

कक्षाएँ उत्सुक युवा दिमाग़ों से भरी होती हैं, विशेष रूप से शुरुआती प्राथमिक कक्षाएँ। अब यह शिक्षक पर निर्भर है कि वे प्रयोग की चिंगारी को हवा दें या प्रश्न पूछने की भावना को आगे बढ़ाएँ। अगर शिक्षक भागीदारी के तरीक़े अपनाते हैं और समृद्ध सामग्री प्रस्तुत करते हैं तो इसका बच्चों की समझ पर जादुई प्रभाव पड़ सकता है। सीखने के लिए यह ज़रूरी है कि विषय-सामग्री आकर्षक हो और बच्चे बिना किसी डर के उससे जुड़ सकें। जिस कक्षा में बच्चे ग़लती करने से डरते नहीं हैं, या जहाँ रचनात्मकता उतनी ही महत्त्वपूर्ण मानी जाती है जितनी कि साक्षरता तो वहाँ विश्वास पैदा होता है। एक समर्थनकारी शिक्षक, एक ऐसा वयस्क जो सम्मान और प्रेम-भाव रखता है, वही भावनात्मक रूप से पोषण प्रदान करने वाले शैक्षिक अवसर निर्मित कर सकता है। जॉन होल्ट के शब्दों में, 'अधिगम शिक्षण का उत्पाद नहीं है। अधिगम शिक्षार्थियों की गतिविधि का उत्पाद है।' ज़रूरत इस बात की है कि बच्चों को जिन चीज़ों से लाभ पहुँचता हो उन अवसरों से लाभ उठाने के तरीक़ों का पता लगाना और वह तरीक़ा है

[1] मैंने तारे की वर्तनी दो तरह से लिखी है। तारे में दीर्घ 'आ' लगाना यह बताता है कि गाते समय आ स्वर को खींचना है,जबकि 'तार्रे-तार्रे तार्रे' की वर्तनी में र ध्वनि दो बार आती है क्योंकि छन्द का, तेज़ी के साथ 'तारे तारे' की ताल के साथ मिलान करना पड़ता है।

अन्य बच्चों के साथ रहना। वास्तव में 3-10 वर्षीय बच्चों को पढ़ाने वाले शिक्षण समुदाय के लिए यह मंत्र होना चाहिए :

1. प्रत्येक बच्चे को विशेष महसूस करवाएँ।
2. बच्चे खेल के सन्दर्भों में बहुत अच्छी तरह से सीखते हैं।
3. चिन्तन करें कि क्या आपकी कक्षा-प्रक्रियाएँ व्यक्तिगत रूप से बच्चे को संलग्न करती हैं।

शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे बाल-उन्मुख शिक्षणशास्त्र से परिचित हों। अपनी पहचान के लिए बच्चों की खोज आमतौर पर तब सक्रिय हो जाती है जब वे एक बड़े समूह में अपने लिए जगह बना पाते हैं। रंगमंच सम्बन्धी खेलों में प्रत्येक सदस्य के व्यक्तित्व को उजागर करने की क्षमता होती है; जिसमें सामूहिक गतिविधि और व्यक्तिगत गतिविधि को बारी-बारी से किया जा सकता है। निम्नलिखित अनुच्छेदों में, अवलोकन और विवेचन के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करके बच्चों की भागीदारी को विकसित करने के तरीक़ों का वर्णन करने का प्रयास किया गया है। छोटे समूह बनाना, साझा करने के लिए बच्चों को आपस में घुलाना-मिलाना आदि कुछ ऐसे तरीक़े हैं जिनसे बच्चों को सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। छोटे समूहों में साझा करने वाले ऐसे क्षण, शर्मीले या शान्त बच्चे को इस बात का अवसर देते हैं कि वे साहस और आत्म-विश्वास जुटाकर ख़ुद को व्यक्त कर सकें।

समीक्षात्मक चिन्तन के एक मार्ग के रूप में मिलकर सीखना

उदाहरण के लिए पाँच या छह बच्चे भाषा के किसी पाठ के विभिन्न अंश ले सकते हैं और अपने-अपने छोटे समूह में आपस में चर्चा कर सकते हैं कि वे इसे कैसे प्रस्तुत करेंगे। वे चित्र बना सकते हैं, अभिनय कर सकते हैं या वाद-विवाद भी कर सकते हैं। वे ख़ुद तरीक़ों के बारे में सोचते हैं और शिक्षक से सुझाव लेते हैं।

ऐसी प्रक्रिया में वे सक्रिय रहते हैं, विषय-सामग्री को ज़िम्मेदारी के साथ लेते हैं और अपने साथी विद्यार्थियों के काम की समीक्षा करते हैं। वे एक-दूसरे के मज़बूत पक्षों से भी परिचित होते हैं। उनमें चिन्तन एवं प्रेरणा की भावना विकसित होती है जिससे वे आगे चलकर अधिक कुशलता के साथ अपनी बात रखने का प्रयास करते हैं। बच्चे महसूस करते हैं कि वे ख़ास हैं और खेल-विधि तथा समूह के साथ जुड़ते हुए अपना विकास करते हैं।

भाषाई जागरूकता के स्रोत के रूप में व्यक्तिगत नाम

मैं एक पूरी कक्षा की अन्तःक्रिया साझा करती हूँ जिसमें शायद कक्षा में कई बच्चों के होने के बावजूद अपनापन है। खेल में आपको अपने नाम के बारे में सोचना होता है, जैसे कि इसका क्या मतलब है, इस पूरे शब्द में कौन-सी ध्वनियाँ आती हैं और फिर अपने नाम को अन्य वस्तुओं तथा स्थानों से जोड़ना होता है, यह सब एक ढाँचे के भीतर करना होता है ठीक वैसे ही जैसे कि किसी अन्य खेल के नियम होते हैं। इस खेल में बच्चों को पता भी नहीं चलता और वे व्याकरणिक कोटियाँ सीख लेते हैं।

नाम का खेल

बच्चों से अनुरोध किया जाता है कि वे अपने नाम को एक क्रिया और एक भावना के साथ बोलें। कक्षा उस क्रिया और नाम को दो बार दोहराएगी। 'मैं शुरू कर सकती हूँ लेकिन गजराज या रोहिणी, क्या आप कोशिश करना चाहते हैं?' खेल शुरू करने वाला या तो अभिव्यंजनापूर्ण रूप से अपनी बात कह सकता है या फिर बस आगे आकर कह सकता है कि *मेरा नाम ____ है।*

आप बस गतिविधि का आनन्द लें और अगर लगे कि इसमें उत्साह की कमी हो रही है तो हस्तक्षेप करें। संयमित व नियंत्रित क्रियाओं को तोड़ने का प्रयास करें : कूदें, एक चक्कर लगाएँ, अपनी बाहें ऊपर उठाएँ, अपना नाम पुकारें। शिक्षक को यह सब करते हुए देखकर बच्चों की ख़ुशी कई गुना बढ़ जाती है और वे इन क्रियाओं को जोश के साथ दोहराते हैं। फिर तो गतिविधि संक्रामक हो जाएगी और बच्चों को खुलकर व्यक्त करने के लिए प्रेरित करेगी। विभिन्न क्रियाएँ करने से और आश्चर्य, साहस, क्रोध, उदासी आदि भावों के अनुकरण से कक्षा की ऊर्जा जीवन्त हो जाएगी।

ध्वनियों की पहचान

अपने हाथों को रगड़ें, इस ऊर्जा को हथेलियों के बीच रखें। पहला क़दम यह है कि खेल के नियमों को स्पष्ट रूप से बताएँ। यहाँ एक उदाहरण है :

1. सबसे पहले बारी-बारी से नाम पुकारें।
2. बच्चों से कहें : अब हम अपने नाम की पहली ध्वनि सुनेंगे।
3. ऐसा शब्द कहें जो पहली ध्वनि के साथ मेल खाता हो।
4. बच्चों को यह समझने दें कि अभी-अभी क्या कहा गया है।
5. यदि निर्देश नहीं समझ में आया हो तो हस्तक्षेप करें और उदाहरण दें।
6. जैसे-जैसे बच्चे भाग लेते हैं, उन्हें एक-दूसरे की प्रतिक्रिया और मिलान किए हुए शब्द में आई ध्वनियों की सटीकता के बारे में निर्णय करने दें।

बहुत सारी प्रतिक्रियाएँ सामने आएँगी और शिक्षक की टिप्पणी

बच्चों के भाषा सीखने और समझने के स्तर पर निर्भर करेगी। छोटे बच्चों के लिए आप खेल को सिर्फ़ ध्वनियों तक सीमित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि स्नेहा, सफ़ेद कहती है, तो यदि आवश्यक हो तो ही ध्वनि के अन्तर की बात करें क्योंकि यह एक सूक्ष्म अन्तर है।

बड़े बच्चों के साथ आप निश्चित रूप से कोमल और दीर्घ ध्वनि की ओर ध्यान दिला सकते हैं। जैसे कि शरद के लिए शहद कहना ठीक है, लेकिन अगर बच्चा शरद के लिए शंख कहता है तो यह ध्वनि का अन्तर और अनुस्वार की मदद से उसे दर्शाने के बारे में बात करने का सही समय है।

संज्ञा की पहचान करने के लिए नामों का उपयोग करना

बड़े बच्चे इससे अधिक जटिल रूप का उपयोग कर सकते हैं। अपने नाम की पहली ध्वनि वाले सिद्धान्त का उपयोग करते हुए बच्चों को उसी ध्वनि से किसी जगह, व्यक्ति या वस्तु का नाम बताना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि बच्चे का नाम पावना है तो वह पटना, पलक और पलंग या पुष्कर, पंखुरी और पिटारा आदि का नाम ले सकती है।

यहीं पर बताया जा सकता है कि ध्वनियों का विस्तार कैसे होता है और ध्वनियों में जुड़ने वाले प्रतीक को हिन्दी में मात्रा कहते हैं। जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ता है, आप सोच-विचार करके अधिक अवधारणाओं को जोड़ सकते हैं। आइए, अब हम अँग्रेज़ी भाषा से एक उदाहरण लेते हैं : यदि बच्चे का नाम मधुर है, तो बच्चा मंकी, मदर और मिर्ज़ापुर या मैंगो कहता है। अब मंकी और मदर शब्द व्यक्तियों के नाम नहीं हैं बल्कि वे एक समूह की श्रेणियों के नाम हैं, जैसे जानवर और फल तथा उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

विभिन्न क्रियाओं को करने और शामिल किए जाने की बच्चों की इच्छा और उनके उत्साह को जीवन्त रखने की बात को ध्यान में रखते हुए, हमारा यह खेल भाषाई जागरूकता को बढ़ाने में सफल रहा है। पहले बताई गई मात्रा वाली अवधारणा की परीक्षा करने की दृष्टि से अगर हम इस गतिविधि को देखें – जिसमें हर बच्चे को विशेष होने का अनुभव कराया जाता है, खेल का उपयोग सीखने के अवसर के रूप में किया जाता है और हर बच्चे को व्यक्तिगत रूप से संलग्न किया जाता है – तो हम सही कार्य कर रहे हैं। उसमें यह बातें भी जोड़ें कि कक्षा को ऊर्जावान बनाए रखा जाता है और शिक्षक प्रक्रिया पर चिन्तन करते हैं। क्या इसे कक्षा की एक सार्थक अन्तःक्रिया माना जाएगा? क्या हँसी-खेल ही जादुई औषधि थी?

इस तरह बच्चों की पहल पर आधारित अन्तःक्रियात्मक अनुक्रिया, अनुपालन और एकरूपता की धारणा को उलट कर रख देती है क्योंकि हर कोई अपने विचारों को साझा करते हुए एक भावनात्मक रोमांच का अनुभव करता है। जब बच्चे ध्वनियों के साथ खेलते हैं तो वे केवल एक तयशुदा पटकथा को अभिनीत नहीं कर रहे होते बल्कि ख़ुद को अभिव्यक्त करते हैं और यह उनकी जिज्ञासा को जाग्रत करता है। और इस तरह एक बड़ा कक्षा-समूह, एक ऐसा सुरक्षित व व्यक्तिगत स्थान बन जाता है जो अर्थ निर्माण के अन्तरों को सुनने के अनुकूल होता है।

खोजबीन अधिगम के रूप में

जब माता-पिता अपनी सन्तान को तनाव-मुक्त वातावरण में ख़ुशी-ख़ुशी नई चीज़ों की खोज करते हुए और स्वतंत्र हो कर प्रयोग करते हुए देखते हैं तो उन्हें बड़ी राहत और ख़ुशी मिलती है। फ़िनलैण्ड में ऐसे ही स्कूल हैं जहाँ शुरुआती वर्षों में कम अकादमिक दबाव के साथ देखने, करने और तलाशने के लिए बहुत कुछ होता है। ताज़ी हवा, प्रकृति और नियमित शारीरिक गतिविधि के लिए समय देने को अधिगम का इंजन या साधन माना जाता है। इस लेख में भी इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि बच्चे शारीरिक गतिविधि से लाभान्वित होते हैं। अक्सर ऐसा लगता है कि कक्षाएँ केवल बच्चों के मस्तिष्क को महत्त्व देती हैं, जबकि अन्य अंग जैसे हृदय और शरीर केवल मानसिक प्रक्रियाओं का समर्थन करने के लिए हैं! यदि बच्चे कक्षा में शान्त न हों तो उन्हें अशान्त या अतिसक्रिय माना जाता है। शारीरिक रूप से खोज करने और संवाद एवं अधिक अनुभवी लोगों के माध्यम से बच्चों का विकास सबसे बेहतर होता है। हृदय, मस्तिष्क और हाथ मिलकर एक शक्तिशाली टीम बनाते हैं।

ऐसा लगता है कि शिक्षा के क्षेत्र में यह धारणा बनी हुई है कि शहरी ग़रीब और ग्रामीण बच्चों की कक्षाओं के पास संसाधनों की कमी है तथा जो कुछ उनके आवासीय वातावरण उपलब्ध करवा सकते हैं, उसे ज़्यादा सम्मान नहीं दिया जाता। शैक्षिक सामग्री शहरी मध्यम वर्ग के दृष्टिकोण से संचालित होती है जो परीक्षण या पाठ्यक्रम डिज़ाइन को नियंत्रित करते हैं। ग्रामीण या शहरी कम आय वाले ठौर-ठिकानों में जिन चीज़ों की बहुतायत है, उनके बारे में बच्चों की परीक्षा लेने के बारे में कभी सोचा ही नहीं जाता, जैसे कि पर्यावरण के दस पक्षियों के नाम बताना या दस सामान्य पेड़ों या बाज़ार की दस अलग-अलग विशेषताओं को सूचीबद्ध करना आदि। हमारे प्रश्न परिवहन के साधनों, ज्यामितीय आकृतियों का मिलान करने और अन्य औपचारिक स्कूली चीज़ों के बारे में होते हैं। यह भावना अभी भी मौजूद है कि अति-ग़रीब समूहों या दूर-दराज़ के स्थानों में पले हुए बच्चों को लाभ मिलना चाहिए, और इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है कि वे अपने शहरी साथियों से किस तरह से भिन्न हैं। वास्तविकता तो यह है कि प्रत्येक समूह के पास कोई न कोई क्षमता और कौशल है। उदाहरण के लिए बच्चों के एक राष्ट्रीय कला मेले में शहर

के विद्यार्थियों ने महसूस किया कि उनमें से बहुत कम लोगों में समूह नृत्य, वाद्य-वादन सामूहिक रूप से गाने या टोकरियाँ बुनने की क्षमता थी। दूसरी ओर समुदायों में रहने वाले बच्चों ने इस तरह की कई कलात्मक परम्पराओं को आत्मसात किया था; कुछ बच्चे पारम्परिक कलाकारों के परिवारों से थे।

अक्सर देखा गया है कि बच्चे भले ही अशिक्षित हों, लेकिन वे कहानी कहने की कला में सक्षम होते हैं जैसे कि राजस्थान की पारम्परिक फड़ कथा की कला। शहरी पत्रकार इस कौशल से प्रभावित होते हैं और दिखावटी बातें करते हैं, किन्तु वे इस घिसे-पिटे सवाल से ख़ुद को दूर नहीं रख पाते कि आपने स्कूल में क्या सीखा? क्या आपको वहाँ अच्छा लगता है? गोया कि समुदाय को वे यह सन्देश दे रहे होते हैं कि : लोक-कला और कौशल ठीक हैं और आकर्षक हैं, लेकिन आप उन्हें आधुनिक जीवन और जीवन जीने के आधुनिक तरीक़ों के अनुसार कैसे अनुकूलित करते हैं? हालाँकि इस बात से कोई इनकार नहीं है कि साक्षरता वास्तव में एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है, पर यह निरक्षर लोगों से जुड़े हुए कौशलों में संज्ञानात्मक क्षमता की उपेक्षा नहीं करता है।

एक संसाधन के रूप में प्रकृति

बच्चे जिज्ञासु होते हैं और होना भी चाहिए क्योंकि यह दुनिया ऐसे अनुभवी लोगों द्वारा नियंत्रित है जो यह भूल जाते हैं कि वे भी कभी बच्चे थे, और इस तरह की दुनिया में जीवित रहने के लिए ‘प्राकृतिक जिज्ञासा’ एक कौशल है। बचपन के अनुभवों तक आसानी से पहुँच पाना शिक्षकों के लिए उपयोगी होता है। प्रकृति, जानकारियों को आपस में जोड़ना एवं दोस्तों के साथ बाहरी दुनिया की खोज करना - यह सभी बातें बच्चों को हमेशा पसन्द होती हैं। जैसा कि पहले कहा गया है, बच्चे सक्रिय अर्थ-निर्माता होते हैं और अपने आवासीय वातावरण से प्रभावित होते हैं। 15 साल की उम्र तक एक ग्रामीण बच्चा इतने सारे बछड़ों को जन्म लेते हुए देख चुका होता है कि वह प्रसव की स्थिति में महिलाओं को पहचानने में काफ़ी अनुभवी हो जाता है।

शारीरिक कौशल हमारे रोजमर्रा के संसाधनों से प्रभावित होते हैं। परिवहन की सुविधा के अभाव के कारण यह बच्चे तेज़ गति से चलने/दौड़ने का कौशल विकसित कर लेते हैं क्योंकि एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए उनके पास यही एक तरीक़ा होता है। बच्चे एक ही गतिविधि को बार-बार करने में समय बिता सकते हैं जैसे तरंगों का अवलोकन करने या अपनी शक्ति का परीक्षण करने के लिए नदी में कंकड़ फेंकना। तेलंगाना में आदिवासियों के साथ काम करने वाले एक शिक्षक ने बताया कि एक बच्चा हवा में कंकड़ फेंकने के बारे में खोज कर रहा था। वह जानना चाहता था कि हवा में कंकड़ को निलम्बित रखने के लिए किस तरह के बल की ज़रूरत पड़ेगी। इस नए युग के न्यूटन को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वह प्राकृतिक घटनाओं को बारीकी से देखे, पूछताछ करे तथा इस तरह के कई अन्वेषण करे। कुछ उदाहरण :

- *जैसा कि सर जी कक्षा में दिखाते हैं, पक्षी त्रिकोण बनाते हुए क्यों उड़ते हैं?*
- *सभी पेड़ों में पत्तियाँ होती हैं फिर भी सभी पत्तियाँ अलग-अलग होती हैं ... लेकिन ज़्यादातर वे त्रिकोणीय होती हैं।*
- *बड़े लड़कों का एक समूह, जो स्कूल में नहीं था, वृत्त बनाने के लिए परकार (कम्पास) का उपयोग नहीं करना चाहता था। शहर के लड़के भौंचक्के रह गए! पर शिक्षक बेहतर जानते थे और उन्होंने उनसे कुआँ खोदने के लिए एक ख़ाका तैयार करने को कहा। ज्यामिति बॉक्स का उपयोग न जानने वाले बच्चे एक बड़ी-सी कील लाए और एक सही वृत्त बनाने के लिए उसमें एक धागा बाँध दिया।*

बच्चों द्वारा किए गए अवलोकन और खेलते समय बच्चों का अवलोकन करके कक्षा के लिए रोचक गतिविधियाँ बनाई जा सकती हैं। शहर के स्कूलों के बच्चे यदि खुले स्थानों में जाकर पत्तों, टहनियों या कंकड़ को इकट्ठा करके उनसे तरह-तरह की आकृतियाँ या स्थानीय रंगोली के डिज़ाइन बनाएँ तो उन्हें काफ़ी लाभ होगा। पैटर्न, दोहरावदार रेखाएँ आदि स्थानिक गणित, डिज़ाइन और आकार की समझ के लिए एक अच्छी कड़ी साबित हो सकती हैं।

शिक्षकों द्वारा चिन्तन

जब भी मैं शिक्षकों से मिली, उन्होंने मुझे बड़े गर्व के साथ अपनी सफलताओं के बारे में बताया। एक शिक्षिका बच्चों को बाहर ले जाकर पेड़ों का अध्ययन करना, खेल खेलना, विभिन्न वस्तुओं को लाना, उनके नाम अँग्रेज़ी में सीखना जैसी गतिविधियाँ करवाना चाहती थीं। वे समूह अधिगम को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही थीं और चाहती थीं कि छोटे समूहों में खेल खिलाएँ, वर्तनी प्रदर्शित करें या मिल-जुलकर आकृतियाँ बनवाएँ।

वे बच्चों को अच्छी तरह से जानती थीं, अतः उन्हें लगा कि कक्षा से निकलकर बाहर खुले में जाने से कितना शोर-शराबा होगा। लेकिन पल भर में वे यह भी जान गईं कि उन्हें क्या करना है। ‘बच्चो,’ उन्होंने कहा, ‘अगर आपने चींटियों को चलते देखा है तो मैं चाहती हूँ कि आप सभी वैसी ही चींटियाँ बन जाएँ जो मैदान में जा रही हैं।’ तो बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से, वे

इस बात से सहमत हो गए कि चींटियाँ एक लाइन में चलती हैं, फुसफुसाती हैं और आगे बढ़ती हैं। मैदान में पेड़ों को छूने, पक्षियों को देखने और पत्तियों को इकट्ठा करने के बाद उन्होंने संक्षेप में वर्णित निम्नलिखित खेलों में भाग लिया :

1. पन्द्रह गिनने तक, सात के समूहों में, एक वर्ग/ अष्टभुज/ त्रिकोण बनाइए। मैदान में कुछ आकृतियाँ ढूँढ़िए और 30 की गिनती खत्म करने से पहले वापस लौट आइए।
2. एक अन्य दिन जो खेल खेला गया, वह इस प्रकार था : उन वस्तुओं को इकट्ठा करना जिनके अँग्रेज़ी नाम बच्चे जानना चाहते थे। यह वस्तुएँ कुछ भी हो सकती थीं जैसे पत्थर, पंखुड़ियाँ, टहनियाँ, तितलियाँ या सिर्फ़ आकाश के रंग - इनके अँग्रेज़ी नाम साझा किए गए। कुछ बच्चों को नाम पता थे और अन्य बच्चों को शिक्षक बता देते थे।
3. इसे वर्तनी के खेल में बदला जा सकता है - पाँच शब्दों को चुनना, उनकी ध्वनियाँ पहचानना, बच्चों को ध्वनियाँ सीखने देना और एक टीम के रूप में अक्षरों को जोड़ना। एक पंक्ति में खड़े चार विद्यार्थी अक्षर 'I' बन सकते हैं, अन्य 'C' अक्षर बनाने के लिए अर्ध गोलाकार में खड़े होते हैं। बच्चे बेहद नए-नए और आश्चर्यजनक तरीक़े खोज लेते हैं। कोशिश यह है कि टीमों की सामूहिक भावना और विवेचन से अधिगम को उभरने दिया जाए।

शिक्षकों की कहानियाँ अक्सर चुनौतियों पर सफलता पाने के लिए, उनके द्वारा किए गए नवाचारों को बताती हैं। शिक्षकों की मुश्किलों और सफलताओं पर ध्यान देते हुए उनके लिए आयोजित की जाने वाली कार्यशालाओं के बारे में फिर से सोचे जाने की आवश्यकता है। जो शिक्षक कुछ हासिल करने का प्रयास करते हैं, उनके द्वारा अपनाए गए उदाहरण और रणनीतियाँ यथार्थवादी अपेक्षाओं और परिणामों पर आधारित होती हैं।

कक्षा के साथ जुड़ाव बनाने में, बच्चों की कुछ भावनात्मक रुकावटें हो सकती हैं। गाँव के स्कूल से शहर के स्कूल में जाने के संक्रमण-काल के दौरान, प्यार से बच्चे का हाथ पकड़ने या कला सम्बन्धी गतिविधियाँ करवाने से किसी अशान्त बच्चे को ध्यान केन्द्रित करने या कठिनाई में पड़े बच्चे को मदद मिल सकती है।

अन्तिम अवलोकन

अन्त में शिक्षकों की प्रशंसा के रूप में, मैं यह प्रस्ताव रखना चाहती हूँ कि उनके कक्षा के अनुभवों को सर्वोत्तम अभ्यासों के संग्रह के रूप में संकलित करके उसे साझा किया जाए। कई शिक्षक ऐसे हैं जो कभी आत्म-सन्तुष्ट नहीं होते, वे हमेशा मौलिक तरीक़े खोजते रहते हैं, वे बच्चों की पहचान का सम्मान करते हुए शिक्षा को परिभाषित व पुनर्परिभाषित करते हैं और इस तरह उसकी सीमाओं का विस्तार करते हैं। साथ ही वे, बच्चे कैसे सीख सकते हैं और कैसे सीखते हैं, इसके बारे में कई तरीक़ों का पता लगाते हैं। उन नवाचारी विजेताओं को सलाम जो बचपन की भावना के माध्यम से बच्चों की रचनात्मकता का मार्गदर्शन करते हैं।

References

Wernar, S. A (1986). *The Teacher*, Australia: Simon and Schuster

Holt, John. (1967)/. *How Children Learn US*: Pitman Publishing (Perseus Publishing (1995)

https://www.washingtonpost.com/education/2019/08/30/what-finland-is-really-doing-improve-its-acclaimed-schools/ Accessed on 29.04. 2020



आशा सिंह बाल-विकास में एसोसिएट प्रोफ़ेसर के रूप में लेडी इरविन कॉलेज में 34 वर्षों तक कार्यरत रहीं। फिर वे उन कार्यों को करने की ओर गईं जो उनके दिल के क़रीब थे। मानव जीवन-चक्र के 'शुरुआती वर्षों में गहरी रुचि रखने वाली' आशा, अम्बेडकर विश्वविद्यालय में युवाओं के साथ और स्कूलों में सेवाकालीन शिक्षकों के साथ कला-आधारित शिक्षा के महत्त्व को साझा कर रही हैं। उन्होंने बड़े पैमाने पर, उन्होंने बड़े पैमाने पर बच्चों को कहानी सुनाने का काम किया है, विशेषकर ऐसी कहानियाँ जो डिजिटल एडल्ट-चाइल्ड इंटरैक्शन को दर्शाती हैं। उनसे asha.singh903@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल